Knowledgeable Research **Vol-1, No-4,** ***November 2022***
An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web:** http://www.knowledgeableresearch.com/

डॉ. धोंडो केशव कर्वे का शैक्षिक दर्शन

डॉ. प्रभात शुक्ल
उपाचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहाँपुर, उ. प्र.
Email : psprabhatshukla@gmail.com

****

ABSTRACT

महर्षि धोंडो केशव कर्वे एक ऐसे आदर्शवादी समाजसुधारक थे जिन्होंने जीवनपर्यंत नारी उद्धार के लिए विशेष प्रयास किए। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दूसरों के उत्थान के लिए ही जिया। वे शिक्षा को सम्पूर्ण मानव समाज के उत्थान का सशक्त माध्यम मानते थे। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार आज भी उतने ही प्रासंगिकत तथा उपयोगी हैं। वर्तमान शोध पत्र मे कर्वे जी के जीवन, कृतित्व तथा शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डाला गया है।

Keywords: *(महर्षि धोंडो केशव कर्वे, समाजसुधार, नारी उद्धार, शिक्षा, विधवा उत्थान)*

****

जीवन परिचय :-

महर्षि धोंडो केशव कर्वे उन महान व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने भारत में महिलाओं के उत्थान के लिए अपना जीवन व्यतीत किया। कर्वे का जन्म 18 अप्रैल, 1858 को रत्नागिरि जिले के दपोली ताल्लुका में स्थिति मुरुद नामक गांव के एक चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम केशोपंत कर्वे तथा माता का नाम लक्ष्मीबाई था। पूर्व में इनका परिवार काफी समृद्ध था परन्तु इनके पितामह बापूनाना के समय में कर्वे परिवार का धन घटने लगा तथा दे धीरे धीरे निर्धन हो गये। इनके जन्म के समय इनके पिता रस्सी बट कर अपनी गुजर बसर करते थे। कर्वे के घर का नाम अण्णा साहब था।

महर्षि कर्वे की प्राथमिक शिक्षा उनके गांव मुरुद में ही हुई। इसके बाद वे आगे की पढ़ाई के लिए मुम्बई चले गए। उन्होंने वहां अध्यापन कर अपनी शिक्षा जारी रखी। 1881 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1884 में एलफिंस्टन कालेज मुम्बई से गणित विषय में बी. ए. की परीक्षा पास की। अपनी स्नातक तक की शिक्षा पूरी करने के बाद कर्वे ने मुम्बई के एक गर्ल्स हाई स्कूल में एक शिक्षक के रूप में नौकरी स्वीकार कर ली।

गोपाल कृष्ण गोखले के निमंत्रण पर कर्वे ने 15 नवम्बर 1891 को फर्ग्यूसन कालेज, पुणे में गणित के प्रोफेसर के रूप में पदभार ग्रहण किया। 1892 उन्होंने डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी, पुणे की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। उन्होंने 1891 से 1914 तक लगभग तेईस वर्षों तक फर्ग्यूसन कालेज, पुणे में नाम मात्र वेतन पर शिक्षण कार्य किया। उनके इस त्यागपूर्ण सेवा कार्य के लिए देश के प्रतिष्ठित लोगों ने उन्हें महर्षि की उपाधि दी जिससे अण्णा साहब कर्वे के स्थान पर वे महर्षि कर्वे के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

बम्बई में रहते हुए कर्वे ने केवल पढ़ाने लिखाने और विद्यार्थियों की सहायता देने का ही कार्य नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने गांव व समाज की उन्नति पर भी ध्यान दिया। मुरुद की उन्नति के लिए उन्होंने एक स्थायी कोप का आयोजन किया। उस समय मुरुद के बहुत से लोग बम्बई में रहते थे। कर्वे ने उन लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित किया और उनसे आर्थिक सहायता प्राप्त कर मुरुद में सार्वजनिक सेवा कार्य आरम्भ किया। इनमें गांव में सड़कों का निर्माण मन्दिरों की मरम्मत, बालिकाओं की शिक्षा के लिए पाठशाला खोलना आदि लोकोपयोगी कार्य किए गए।

वैवाहिक जीवन :-

कर्वे का विवाह उनके माता-पिता ने 14 वर्ष की अल्प आयु में ही 8 वर्षीय राधाबाई से कर दिया था। राधाबाई की मृत्यु 1891 में 26 वर्ष की उम्र में हो गई पत्नी के गुजरने पर दो छोटे बच्चों की जिम्मेदारी उन पर भी आ गयी और उनका ध्यान जनसेवा के कार्यों से हटकर बच्चों की परवरिश की ओर जाने लगा।

हितचिन्तकों ने उन्हें पुर्नविवाह करने का परामर्श दिया। परिवार वालों ने लड़की तक देख ली। कर्वे के समय समाज में विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी विशेषकर उन्नीसवीं सदी में बाल विवाह की प्रचलित प्रथा और बाल मृत्यु दर की उच्च दर इसके मुख्य कारण थे। इन दुर्भाग्यपूर्ण महिलाओं की स्थिति समाज में बहुत दयनीय होती थी। समाज में उनका कोई स्थान नहीं था साथ ही परिवार के सदस्य भी उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया करते थे। समाज में विधवाओं की दुर्दशा को महसूस करते हुए उन्होंने निदान स्वरूप घोषणा कर दी कि यदि दे पुर्नविवाह करेंगे तो किसी विधवा से ही करेंगे। महर्षि कर्वे अपने बच्चों की समस्या को हल करने के साथ साथ विधवाओं के उद्धार का भी श्री गणेश करना चाहते थे।

अपने प्रण को पूरा करने के उद्देश्य से उन्होंने अपने मित्र नरहर पंत की बाल विधवा विवाह बहन आनन्दी बाई के साथ 11 मार्च 1893 ई. को विवाह किया। उनके विवाह में पूना के सभी समाज-सुधारकों ने भाग लिया। परन्तु इस विवाह से पूना और महाराष्ट्र के ब्राह्मण

समाज में तूफान उठ खड़ा हुआ और उन्हें जाति से बाहर कर दिया गया। यहाँ तक कि जब वे अपनी पत्नी को लेकर गांव में माता-पिता और भाई से मिलने गए तो उन्हें घर के बाहर जानवर बांधने के स्थान पर ठहराया गया।

कृतित्व :-

महर्षि कर्वे अपने साथ हुए तिरस्कारपूर्ण व्यवहार का बुरा नहीं माना और पूना लौटकर पुनः स्त्री उद्धार के कार्य में लग गए। उन्होंने विधवाओं से विवाह करने वाले समाज से परिष्कृत परिवारों और उनके बच्चों की रक्षा करने के लिए ऐसे परिवारों की खोज की। इन व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर उन्होंने विधवाओं के बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध किया और विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए 1893 ई. में उन्होंने एक श्विधवा विवाहोत्तेजक मण्डलीश् की स्थापना की। इसके साथ ही विधवा विवाह के लिए उन्होंने कई पंडितों को तैयार किया।

जनता में विधवा विवाह का प्रचार करने के लिए उन्होंने कई जगह की यात्रा की और भाषण देकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। अपनी इन यात्राओं में कर्वे जी ने अनुभव किया कि जब तक स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार न होगा तब तक विधवा विवाह की समस्या को हल करने में पूरी सफलता मिलना असंभव है। यदि विधवायें एवं कन्यायें शिक्षित एवं प्रशिक्षित हो कर अपने पैरों पर खड़ी हो सकने योग्य हो जाये तो उनकी स्थिति बहुत कुछ सुधर सकती है।

इसके निदान हेतु कर्वे ने पूना के हिंगना नामक स्थान पर 57 विषयाओं और 19 क्यारी अनाथ कन्याओं को लेकर 'अनाथ बालिकाश्रम मंडली' नामक एक संगठन प्रारम्भ कर विषया आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम का उद्देश्य अनाथ विधवाओं और कन्याओं को शिक्षा के साथ साथ साधारण घरेलू धन्यों में प्रशिक्षित कर स्वावलंबी बनाना और उनमें आत्मविश्वास का विकास करना था।

कुछ समय बाद उन्होंने आश्रम को दो शाखाओं में विभक्त कर दिया। एक अनाथ विधवाश्रम और दूसरा कन्या विद्यालय अनाथ विधवाश्रम की विधवायें पढ़ने के साथ साथ जी काम धन्धा करती थीं, उनकी आमदनी बालिका विद्यालय के खर्च में काम आने लगी।

अनाथालय के बारे में कर्वे ने अपनी आत्मकथा में लिखा, "आश्रम का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह आशा का बीज है जो उन्होंने विधवाओं के हृदय में बिठाया है। आश्रम का उद्देश्य विधवाओं को शिक्षित करना, उनके दिमाग को शिक्षित करना, उन्हें आत्मनिर्भर

बनने के लिए साधन प्राप्त करना और उनमें यह विश्वास जगाना है कि उनका जीवन उपयोगी है और वे अच्छा कर रहे हैं।''

बाद में 1946 में 'अनाथ बालिकाश्रम मंडली' का नाम बदलकर 'हिंगाने स्त्री-शिक्षा संस्थान' कर दिया गया। वर्तमान में इस संस्थान को 'महर्षि कर्वे स्त्री शिक्षा संस्थान' के नाम से जाना जाता है। उनके द्वारा महिला विद्यालय की स्थापना 7 मार्च, 1907 को पुणे में महिलाओं को इस तरह से शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी जो उनके दैनिक जीवन में उपयोगी हो और उनके स्वभाव का पोषण करे।

4 नवम्बर, 1908 को महिलाओं के उत्थान और इसके लिए बनाए गए संगठनों के लिए निस्वार्थ सामाजिक कार्यकर्ता बनाने के उद्देश्य से 'निष्काम कर्म मठ' की स्थापना की। उनका मानना था कि बिना किसी लाभ की आशा के निस्वार्थ कार्यकर्ताओं का संवर्ग बनाकर ही समाज सेवा विशेषकर महिला सेवा का कार्य बेहतर ढंग से किया जा सकता है।

टोक्यो, जापान के महिला विश्वविद्यालय से प्रेरित होकर 03 जून, 1916 को उन्होंने हिंगाने में एक स्वतंत्र महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। सन 1919 में सर दामोदर ठाकरसे ने अपनी मां श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसे की स्मृति में विश्वविद्यालय को 15 लाख रूपये दान देकर उसकी अनेक आर्थिक कठिनाइयों को दूर कर दिया, परिणामस्वरूप उसका नाम 'नाथीबाई दामोदर ठाकरसे भारतीय महिला विश्वविद्यालय' हो गया।

उस समय महिलाओं की शिक्षा में अंग्रेजी भाषा एक बड़ी बाधा थी यह देखते हुए निर्णय लिया गया कि महिला विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। हालांकी, अंग्रेजी भाषा के महत्व को देखते हुए, अंग्रेजी के शिक्षण को भी सुविधाजनक बनाया गया।

विश्वविद्यालय में महिलाओं के जीवन के लिए उपयोगी पाठ्यक्रमों जैसे गृह विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, ललित कला आदि को शामिल किया गया। डिग्री परीक्षाओं के अलावा, महिला विश्वविद्यालय में माध्यमिक प्रशिक्षण डिग्री, गृह विज्ञान की डिग्री, नर्स की डिग्री जैसे विशेष पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए।

इस महिला विश्वविद्यालय के धनाभाव को दूर करने तथा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में नई-नई जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से करें जी ने विदेश की यात्राएं भी की। 1928 में वह यूरोप, अमेरिका और जापान गए। 1930 में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की इन यात्राओं में उन्हें स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक बातें ज्ञातें हुई और उन्होंने उनको अपनी शिक्षा योजना में स्थान दिया। 1936 में उन्होंने श्महाराष्ट्र ग्राम शिक्षण मण्डलश् की स्थापना की।

वह भारतीय समाज में जातिवाद और अस्पृश्यता जैसी अवांछनीय प्रथाओं के भी विरोधी थे। उन्होंने समाज से छुआछूत और ऊँच-नीच के भेदभाव को दूर करने के लिए 1944 में 'समता संघ' की स्थापना की।

कर्वे हमारे देश के गौरव थे। उनका जीवन निष्काम साधना का जीवन था। यह सच्चे अर्थ में कर्मयोगी शिक्षक थे। कर्वे जी के जीवन का मुख्य कार्यक्षेत्र समाज शिक्षा था। उन्होंने समाज के प्रत्येक अंग के सुधार पर ध्यान दिया। समाज में नव जागृति उत्पन्न करने के लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा को ही चुना और उसी के माध्यम से उन्होंने समाज की अन्य सुधार योजनाओं को प्रसारित एवं प्रचारित किया।

पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ:-

कर्वे जी मान सम्मान के भूखे नहीं थे। मान-सम्मान प्राप्त करने की आकांक्षा से उन्होंने सेवा व्रत नहीं लिया था। नारी जाति के प्रति उनकी कारूण्य भावना से बल पाकर ही वे इस दिखा में कार्यरत रहते थे। उसी भावना ने उन्हें ऊँचा उठाया था। उन्हें विभिन्न पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए जो निम्नानुसार हैं-

1. 1942 में काशी विश्वविद्यालय, 1951 में पूना विश्वविद्यालय तथा 1954 में प्रयाग विश्वविद्यालय से डी.लिट. उपाधि।
2. 1958 में बम्बई विश्वविद्यालय से एल. एल. डी. की सम्मानित उपाधि।
3. 26 जनवरी, 1956 ई. को 'पद्म भूषण' की उपाधि।
4. 26 जनवारी 1958 ई. को देश की सर्वोच्च 'भारत रत्न' की उपाधि।
5. स्वतंत्र भारत के पहले व्यक्ति जिनके जीवित रहते हुए 1958 में उनकी जन्म शताब्दी को चिन्हित करते हुए डाक टिकट जारी किए गए।

महर्षि कर्वे के शैक्षिक विचार:-

महर्षि कर्वे के शब्दों में, 'राष्ट्र का उत्पान तभी होगा जब सभी वर्गों को समान शिक्षा दी जाए समाज से अस्पृश्यता की भावना को समाप्त किया जाए।' कर्वे कहते थे कि 'जब स्त्री शिक्षित होगी तभी समाज का उत्कर्ष होगा और समाज का उत्कर्ष होगा तो राष्ट्र का उत्कर्ष होगा।' सामाजिक ढांचे को बदलने में शिक्षा में प्रारम्भ से ही सुधार करना उन्होंने आवश्यक समझा। बच्चों के विचारों, उनके कार्यों और आचरणों को सही दिशा में मोड़ने हेतु शिक्षा ही प्रभावपूर्ण शक्ति हो सकती है।

कर्वे ने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने के लिए मोम्बासा, केन्या, युगांडा, सन्जानिड़का, इग्लैण्ड, जंजीबार, पुर्तगाल, पूर्वी अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका का भ्रमण किया। मार्च 1929 में डॉ कर्वे ने इग्लैण्ड का दौरा किया। मेलबर्न में प्राथमिक शिक्षक सम्मेलन में भाग लिया। कर्वे जी ने शिक्षक-शिक्षा प्रणाली में शिक्षक के कार्य प्रशिक्षण पर बल दिया। लन्दन के केक्सटन हाल में ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन की बैठक में डॉ. धोंडो केशव कर्वे ने भाग लिया तथा भारत में महिलाओं की शिक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

25 जुलाई से 04 अगस्त 1929 में जिनेवा में शैक्षिक सम्मेलन में डॉ धोंडो केशव कर्वे ने भाग लिया तथा 'महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा में भारतीय प्रयोग' विषय पर अपने विचार रखे। महर्षि कर्वे शिक्षा के माध्यम से देश के बेकारी दूर करना चाहते थे सांस्कृतिक चेतना व चरित्र निर्माण, राष्ट्र उत्थान, महिला शिक्षा, विधवाओं की दशा व दिशा में सुधार करना उनकी शिक्षा का स्थायी लक्ष्य था।

1. शिक्षा का अर्थ - महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे चाहते थे कि भारत का प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति शिक्षित हो तभी राष्ट्र का उत्थान व समाज का विकास सम्भव है। महर्षि कर्वे के अनुसार, 'शिक्षा वह वस्तु है जो जटिल दशाओं में तात्कालीन परिस्थितियों में समन्वय स्थापित कर संयमित जीवन के योग्य बनाती है।'

2. शिक्षा का उद्देश्य - महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे ने समय-समय पर शिक्षा में विभिन्न सुधार किए तथा शिक्षा के निम्न उद्देश्य बताए-

(i) आत्मनिर्भर बनानाः महर्षि धोंडो केशव कर्वे चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो बालक को आगामी जीवन में आत्मनिर्भर बना सके। बालक में प्रत्येक कार्य को स्वयं करने की क्षमता उत्पन्न करना चाहते थे इस प्रकार की दक्षता से स्वयं उसका, समाज का तथा देश का कल्याण सम्भव है कर्वे जी बालक को परिश्रम के महत्व का ज्ञान देकर समाज में व्याप्त वर्ग भेद की खाई को पाटना चाहते थे।

(ii) चरित्र निर्माणः महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे जी ने नैतिकता को धर्म से उत्तम् माना है तथा सच्चे धर्म एवं नैतिकता में अभिन्न सम्बन्ध बताया है। चरित्र निर्माण शिक्षा का सर्वोपरि उद्देश्य है।

कर्वे के अनुसार, 'शिक्षा चरित्र निर्माण में ही है, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, हरबर्ट स्पेंसर, गीता को पढ़ने से मेरे इस विश्वास की और अधिक पुष्टि होती है।'

महर्षि धोंडो केशव कर्वे एक महान समाज सुधारक थे जो यह विश्वास करते थे कि यदि व्यक्ति का चरित्र का निर्माण एक बार कर दिया जाय तो समाज अपने आप सुधर जाएगा।

(iii) सांस्कृतिक विकासः महर्षि कर्वे आदर्शवादी प्रवृत्ति के थे जिनके अनुसार मनुष्य समाज द्वारा स्वीकृत नियमों का पालन करता है तथा मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संस्कृति है, रहन-सहन एवं खान-पान की विधियाँ, रीति-रिवाज, भाषा, साहित्य, कला, संगीत और मूल्य हैं। अतः कर्वे शिक्षा द्वारा मनुष्य की संस्कृति के संरक्षण और विकास पर बल देते हैं तथा इसे शिक्षा का एक उद्देश्य निश्चित करते हैं। कर्वे शिक्षा क्षेत्र में विदेशों की अच्छी बातें और संस्कृति को अपनाने के पक्ष में थे।

(iv) आध्यात्मिक चेतना का विकासः महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे को देवता की पूजा करना, धार्मिक ग्रन्थ पढ़ना आदि योग्यताएं विरासत में प्राप्त हुई थी। मनुष्यु सत्य की खोज तभी कर सकता है जब वह आध्यात्मिक शक्ति का विकास करता है।

(v) शारीरिक विकासः कर्वे जी के दर्शन से यह स्पष्ट है कि शारीरिक श्रम से बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक तीनों का विकास सरलता से होता है। डॉ धोंडो केशव कर्वे जी ने रोटी के लिए कर्म का सिद्धान्त गीता से ग्रहण किया था। उनके अनुसार परिश्रम ही मनुष्य के आध्यत्मिक विकास का साधन है।

(vi) विधवाओं की दशा व दिशा में सुधारः महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे ने विधवाओं की दयनीय स्थिति में सुधार हेतु होम एसोसिएशन की स्थापना की। जिससे विधवा के पुर्नविवाह पर जोर दिया। कर्वे जी ईश्वरचन्द्र से प्रभावित रहे। जिसके परिणामस्वरूप सतीप्रथा को समाज से खत्म किया गया।

उपर्युक्त समस्त उद्देश्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि महर्षि कर्वे जी का लक्ष्य प्रत्येक प्राणी को मानवीय गुणों से युक्त बनाकर उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन निर्वाह की सम्पन्नता का निर्माण करना था। इस लक्ष्य के अन्तर्गत परिश्रम के महत्व द्वारा समाज में व्याप्त वर्ग-भेद की भावना को समाप्त कर आदर्श की स्थापना करना था।

3. **शिक्षक -** महर्षि डॉ धोंडो केशव कर्वे शिक्षक को बालक का मित्र, परामर्शदाता एवं पथ-प्रदर्शक मानते थे तथा यह चाहते थे कि शिक्षक मैत्रीपूर्ण ढंग से बालक में सशक्त मानवीय गुणों का विकास करें। कर्वे के अनुसार जो शिक्षक अपनी जिम्मेदारी केवल विषय सिखाने की समझता है तथा विद्यार्थी के चरित्र के बारे में अपने को जिम्मेदार नहीं मानता, वह शिक्षक कहा ही नहीं जा सकता है। शिक्षक को विद्यार्थी से भी अधिक अच्छा विद्यार्थी जीवन बिताना चाहिए और अध्ययन-मग्न रहना चाहिए।

गुरु शब्द गु+रु से बना है 'गु' का अर्थ है 'अन्धकार, अवगुण' तथा 'रु' का अर्थ है 'रोकना'। अतः गुरु शब्द का अर्थ है अन्धकार, अवगुण को रोकने वाला। डॉ कर्वे जी के अनुसार बालक को अवगुणहीन बनाना शिक्षक का कार्य है।

4. **विद्यार्थी -** महर्षि कर्वे के अनुसार विद्यार्थी में निम्न गुणों का होना आवश्यक है-

- विद्यार्थी को नियम, संयम, सदाचारी रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।
- विद्यार्थी में चरित्र बल, बुद्धि बल, आत्म बल तथा शारीरिक बल का होना आवश्यक है।
- कर्वे जी विद्यार्थी को अनुशासित, ईमानदार, देशसेवी त्यागी, सहिष्णु के रूप में देखना चाहते थे।
- विद्यार्थी को शिक्षक के प्रति श्रद्धा, विनय सेवावृत्ति भाव से व्यवहार करना चाहिए।

5. **पाठ्यक्रम -** महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने मनुष्य के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास पर बल दिया। इसकी प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम में भाषा, साहित्य, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कला, संगीत, गृहविज्ञान, गणित, शारीरिक विज्ञान का समावेश किया जाना चाहिए।

6. **अनुशासन -** मनुष्य की इन्द्रियां भौतिक गुण की ओर खींचती हैं। आत्मा आध्यात्मिक - आनन्द की ओर खींचती है आत्मा से शासित होना सच्चा अनुशासन है कर्वे के अनुसार बच्चों को अनैतिक आचरण से रोके। बच्चों को ऐसा वातावरण दिया जाय कि वे स्वः नैतिक

आचरण की ओर अग्रसर हों। उचित पर्यावरण में बच्चे स्वतः अनुशासित होंगे जो एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

महर्षि कर्वे जी ने स्वयं अपने जीवन को आजीवन अनुशासनबद्ध किया तथा अपने आवरण से स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करते रहे। उनके अनुशासन में दण्ड और ताड़ना का स्थान नहीं था। उनके विचार से शिक्षक को अनुशासित और चरित्रवान होना चाहिए क्योंकि कर्वे जी ने चरित्र को मानव जीवन का अमूल्य वैभव और बालक को एक अनुकरणप्रधान प्राणी माना है।

7. **शिक्षण विधि -** महर्षि कर्वे ने अनुकरण विधि को लाभकारी बताया तथा वे आत्मक्रिया, - अनुदेशन प्रणाली, स्वाध्याय विधि के भी पक्षधर थे।

8. **शिक्षा का माध्यम -** महर्षि कर्वे के अनुसार शिक्षा का माध्यम मराठी, अंग्रेजी भाषा होनी चाहिए। भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने मातृभाषा को ही शिक्षा का सही माध्यम माना को जी पाश्चात्य शिक्षा को भी महत्वपूर्ण माना।

9. **विद्यालय -** महर्षि कर्वे के अनुसार मनुष्य तभी आत्मानुभूति कर सकता है जब उसका शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक विकास हो जाए। कर्वे जी कहते हैं कि विद्यालय ऐसा हो, जो सामाजिक आदर्शों व मूल्यों से परिपूर्ण हो तथा उच्च सामाजिक वातावरण वाला हो। विद्यालयों में आदर्श शिक्षकों के पास आकर बच्चे उच्च आदशों की शिक्षा प्राप्त करते हैं। विद्यालय ऐसे स्थान पर होने चाहिए जहाँ बच्चे उच्च सामाजिक आदर्शों तथा आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति की ओर बढ़ सकें।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि महर्षि धोंडो केशव कर्वे एक ऐसे आदर्शवादी समाज सुधारक थे जो कि असाधारण गुणसम्पन्न महापुरुष थे। समाज सुधार में महर्षि कर्वे का मुख्य कार्यक्षेत्र नारी उद्धार का था। नारी उद्धार विशेषकर विधया उत्थान का विचार उनके मन में अपने ही चिंतन से आया, विधवाओं की दुर्दशा जिसे उन्होंने अपने ही घर और पास पड़ोस में देखा था ने उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया।

महर्षि कर्वे ने एक सौ चार वर्षों का अपना सम्पूर्ण जीवन दूसरों के उत्थान के लिए ही बिताया। ऐसा जीवन, जो कठिनाइयों से से भरा था जिन्हें झेलना ही था, कठिनाइयाँ

जिन्हें दूर करना था, ऐसे कार्यों से भरा था जिन्हें भारी विरोध के बावजूद पूरा करना था। बहुत ही धीरज और संतुलन के साथ उन्होंने यह सब किया।

महर्षि कर्वे जी ने स्वाध्याय को व्यक्ति निर्माण के लिए आवश्यक अंग बताया। महर्षि कर्वे ने विद्यालय व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकृतिमय वातावरण को तथा एक मात्र शिक्षण विधि के रूप में अनुकरण को महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार अनुशासन के लिए छात्रों में आत्मानुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिए।

महर्षि कर्वे ने विधवाओं की स्थिति में सुधार हेतु 'विधवा विवाह संघ' की स्थापना की, नारी उत्थान के लिए 'महिला विद्यालय' स्थापित किए, वर्ग-भेद की समाप्ति हेतु 'समता संघ' की स्थापना की। महर्षि कर्वे के शैक्षिक विचार तथा समाज सुधार व मानव समानता के उनके प्रयास विशेष उल्लेखनीय हैं।

Reference

चन्दावरकर, जी. एल. (1977). *धोंडो केशव कर्वे.* नई दिल्लीः निदेशक प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

Kumar, Raj (2004). *Essays on Social Reform Movements.* New Delhi: Discovery Publishing House.